डॉ० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

स्वप्नवासवदत्तम्

चरित्र-चित्रण :-

वासवदत्ता

महाकवि भास के नारी-चरित्रों में सबसे प्रमुख वासवदत्ता का चरित्र है। यह चरित्र 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' और 'स्वप्नवासवदत्तम्' दोनों ही नाटकों में विकसित हुआ है। वह अपने

वासवदत्ता अपने पति के अभ्युदय के लिए सर्वस्व त्याग करने के लिए तैयार रहती है। उसे अपने उच्चकुल का अभिमान है। 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अंक के प्रारम्भ में ही तपोवन में राजपुरुषों द्वारा की जाने वाली उत्सारणा को सुन कर दुःखी होती है। वही कहती है – "तथा परिश्रमः परिखेदं नोत्पादयति, यथायं परिभवः।" चाहे परिश्रय हो अथवा न हो वह अपने बराबरी वालों को देखकर प्रसन्न होती है, उससे स्नेह करती है उसके मन में ईर्ष्या की भावना तनिक भी नहीं है। प्रथम अंक में पद्मावती को देखकर यह कहती है – "राजदारिकेति श्रुत्वा भगिनिकास्नेहोऽपि मेऽत्र सम्पद्यते।" वह दूसरे के गुणों की प्रशंसा करती है। वासवदत्ता के चरित्र में स्त्रियों की ईर्ष्यालु प्रकृति का दर्शन नहीं होता है। प्रायः यह देखा जाता है कि स्त्रियाँ अपने समक्ष दूसरी स्त्रियों को नगण्य सौन्दर्य को नगण्य मानती हैं। पर वासवदत्ता के चरित्र में यह दोष नहीं है। वह पद्मावती के रूप को देख कर उसकी प्रशंसा करती है।

रूपयौवनशालिनी होने पर भी वह पतिव्रता और सती नारी है। वह पर पुरुष दर्शन नहीं करती। प्रथम अंक में ब्रह्मचारी के तपोवन में प्रवेश करने

करने पर वह लज्जावश 'हम' कह कर अपनी अकीर्ति प्रकट करती है। पद्मावती को वासवदत्ता के इस चरित्र से विश्वास हो जाता है कि इसकी रक्षा करना कठिन नहीं है।

वासवदत्ता के हृदय में राजा के प्रति अपार स्नेह है। जब ब्रह्मचारी आकर राजा के मूर्च्छित होने की बात सुनाता है तो वह रोने लगती है। और मन ही मन दुःखी होकर कहती है कि अब यौगन्धरायण का मनोरथ पूर्ण हो। पंचम अंक में पद्मावती की अस्वस्थता का समाचार सुन कर वह राजा के लिए चिन्तित हो जाती है। वह सोचती है कि विरह व्यथित राजा के लिए पद्मावती विश्राम स्वरूप है, उसके अस्वस्थ हो जाने से राजा को कष्ट होगा। चतुर्थ अंक में वह पद्मावती से वार्तालाप करती है तब वह बतलाती है — 'राजा तुम्हें जितना प्रिय है उससे भी अधिक वासवदत्ता को प्यारा है।' उसको अपने सुख की अपेक्षा राजा का हित अधिक अभीष्ट है। यह जान कर कि खोये हुए राज्य की प्राप्ति के लिए मगधराज दर्शक की मित्रता आवश्यक है और यह तभी सम्भव है जब राजा का पद्मावती से विवाह हो। इतना ही नहीं वह अपनी सुख-सुविधाओं का त्याग कर यौगन्धरायण के साथ दर-दर भटकती हुयी अपनी सौत पद्मावती के घर में न्यास रूप में रहना स्वीकार कर लेती है। अपने विषय में राजा के मुख से निकला हुआ एक प्रेमोद्गार ही उसे उत्साहपूर्वक सभी प्रकार के कष्ट सहन करने के लिए पर्याप्त है। राजा कहता है —

"पद्मावती बहुमता मम यद्यपि रूपशीलमाधुर्यैः।
वासवदत्तावद्धं न तु तावन्मे मनो हरति।"

इस कथन को सुन कर वासवदत्ता अपने

सौभाग्य की प्रशंसा करती हुयी कहती है — "दत्तं वेतनमस्य परिखेदस्य। अहो अज्ञातवासोऽप्यत्र बहुगुणः सम्पद्यते।" वह अपने स्वार्थ के लिए पद्मावती को राजा से विरक्त नहीं करती। वह उसके सामने राजा की प्रशंसा कर उसके अनुराग को वृद्धिगत करती है। वह असमय में राजा के समक्ष उपस्थित भी नहीं होना चाहती। उसे भय है कि कहीं राजा के हित के लिए की हुयी यौगन्धरायण की योजना असफल न हो जाय। उसके मन में यह पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार वह राजा को प्रेम करती है उसी प्रकार राजा भी उससे प्रेम करता है उसके मन में पद्मावती और उदयन के विवाह के होने पर भी दुःख नहीं है।

नाटककार भास ने वासवदत्ता को आदर्श सपत्नी के रूप में चित्रित किया है। उसे पद्मावती को देख कर ईर्ष्या नहीं होती। प्रथम अंक में राजा के साथ पद्मावती के भावी विवाह का समाचार सुनकर वह उसे आत्मीय समझने लगती है। विवाह के समय वह स्वयं सौभाग्य माला गूँथती है। इस प्रकार नाटककार ने वासवदत्ता का प्रेम जीवन संघर्ष की कसौटी कर कस कर खरा दिखलाया है। उदयन की सुख-सुविधा के लिए वह समस्त सुख-सुविधा का त्याग कर सकती है। उसका प्रेम आदर्श प्रेम है। वह आरम्भ से लेकर अन्त तक अपने पवित्र प्रेम का परिचय देती है। पतिव्रता नारी के लिए पति ही सर्वस्व है। पति के लिए ही उसका तन-मन-धन सब कुछ समर्पित है। स्त्री सुलभ ईर्ष्या रहते हुए भी उसने कभी उसे प्रकट नहीं होने दिया। वह पद्मावती को सौत की तरह नहीं छोटी बहन की तरह आजीवन मानती रही।

स्पष्टतः वासवदत्ता एक आदर्श नारी है उसका पतिव्रत अन्य नारियों के लिए अनुकरणीय है।